हांगकांग से एक नवाचार

अनुराधा नायडू

किण्डरगार्टन के बच्चों का एक छोटा सा समूह कतारबद्ध होकर अपनी कला की कक्षा में दाखिल हो रहा था और मैं दरवाजे पर खड़ी होकर उन्हें देख रही थी। ये बच्चे प्रत्याशा से भरे हुए थे। मेरी युवा सहयोगी रोज़लीन अपनी कला की कक्षा कुछ इस तरह से नियोजित करती थी कि उसमें हर बच्चे के लिए सीखने या करने के लिए कुछ न कुछ होता था। जब मैंने उसे बच्चों के साथ काम करते हुए देखा तो मैं विस्मित रह गई। उसका कहना था कि खुद अपनी पसन्द के अनुसार काम करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। हर बच्चा रचनात्मक होता है और उसकी अपनी एक अनोखी शैली होती है। बच्चों के विचार भी अलग–अलग होते हैं, कुछ बच्चे 'एक्शन' चाहते हैं और तीन या चार के समूह में काम करना पसन्द करते हैं। वे समूह में बहुत खुश रहते हैं। कुछ ब्रश के साथ काम करने में महारत हासिल करना चाहते हैं और अकेले काम करना पसन्द करते हैं तो कुछ नई खोज करने की स्वतंत्रता चाहते हैं। रोज़लीन अपनी किण्डरगार्टन की कक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को लेने के लिए हमेशा तैयार रहती थी। उसका मानना था कि बच्चों को दयालु होना और दूसरों की देखभाल करना सिखाना आवश्यक है क्योंकि यही जीवन की नींव रखने का तरीका है। रोज़लीन एक रचनात्मक शिक्षिका थी और मुझे उसके साथ काम करना अच्छा लगता था। हम हमेशा मिलकर समस्याओं का समाधान खोजते और वह खुशी–खुशी नई रणनीतियों को अपनाने की कोशिश करती तथा कुछ हफ्तों बाद मुझे उसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया देती। जल्द ही हम एक–दूसरे को अच्छी तरह से समझने लगे और ऐसे नए–नए तरीकों को तैयार करने में लग गए जिनमें जॉन को शामिल करना था। जॉन स्वलीनता स्पेक्ट्रम (Autism Spectrum[1]) के अन्तर्गत आता था और जब कक्षा में बच्चे मिल–जुलकर गाते, खेलते या मस्ती करते तब वह चुपचाप बाहर निकल जाता।

कला की कक्षा शुरू हो चुकी थी। चूँकि उस रोज की कक्षा का फोकस एक मछली[2] थी, इसलिए सभी बच्चे भावनात्मक रूप से काफी जोर–शोर से भाग ले रहे थे। इन बच्चों के कक्षा में आने के काफी देर बाद जॉन आया। वह समझ नहीं पा रहा था कि पेंटिंग की इस कक्षा में वह क्या करे। रोज़लीन ने सुबह हांगकांग के बाजार से ताजी पॉम्फ्रेट (एक प्रकार की समुद्री मछली) खरीदी थी। हवा में पोस्टर पेंट की गंध के साथ मछली की गंध भी घुल गई थी। रोज़लीन की योजना यह थी कि इस असामान्य चित्र प्रायोजना के माध्यम से समुद्री संसार को जीवन्त कर दिया जाए। हर बच्चे को मछली में रंग भरने का अवसर तो मिला ही साथ ही वे अपने आर्ट पेपर को उस पर रगड़कर उसके शल्क के पैटर्न समझने का प्रयास भी कर पाए। जॉन हिचकते हुए यह सब देख रहा था। मैं अपनी साँस रोके यह सोच रही थी जॉन, जिसके साथ असंख्य संवेदी मुद्दे जुड़े हुए हैं, पर इस कक्षा का क्या असर पड़ेगा। क्या वह रंगों और मछली को छुएगा? कहीं यह गंध उसे परेशान तो नहीं करेगी? क्या वह शिक्षिका की मदद लेगा? क्या वह उन दूसरे बच्चों के साथ बैठेगा जो अपनी बारी का इन्तजार कर रहे थे? क्या इस अपरिचित स्थिति की वजह से बात बिगड़ तो नहीं जाएगी?

[1] *स्वलीनता मस्तिष्क सम्बन्धी एक विकार है जो मस्तिष्क के सामाजिक और भावनात्मक क्षेत्रों को प्रभावित करता है और इससे सम्प्रेषण, सामाजिक सम्बन्धों और कल्पनाशीलता से जुड़ी चुनौतियाँ पैदा होती हैं। यह विकार दो से तीन साल की उम्र में नजर आता है और लड़कों में आम है।*
http://www.thenationaltrust.co.in/nt/index.php?option=com_content&task=view&id=30&Itemid=130

[2] *मुख्यधारा में संवेदी खेलों के लिए जो विचार हैं, उनमें पानी और रेत के टेबल, उंगली पेंटिंग, प्लेडो, छपाई, बुलबुले और बर्फ शामिल हैं। किण्डरगार्टन में प्लास्टिक की एप्रन, मेजपोश और कपड़े धोने की मशीन हो तो सफाई आसान हो जाएगी।*

मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। जॉन और मैं, एक दूसरे के साथ कई महीनों से काम कर रहे थे ताकि जॉन के दिल से नई बनावटों और ध्वनियों के डर को दूर किया जा सके। यह हमारे लिए एक बहुत महत्त्वपूर्ण पल था। रोज़लीन अपने सबक को आगे बढ़ाती गई। उसने एकदम स्पष्ट और सटीक चरणों में दिखाया कि मछली और पेंट का उपयोग कैसे किया जाए। उसने बारी–बारी से हर बच्चे को आगे आने के लिए कहा। बच्चे अकेले या समूहों में अपने रचनात्मक काम में लगे रहे और मछली के चित्रों में मानसूनी सलेटी और इन्द्रधनुषी रंग भरते रहे। कमरे में शान्ति थी। जॉन सावधानी से देख रहा था। जब सबकी बारी आ चुकी तब रोज़लीन ने जॉन की ओर देखा और कहा," आगे बढ़ो!" जब जॉन आगे की ओर दौड़ा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा! वाकई, यह हमारे लिए एक बहुत महत्त्वपूर्ण पल था!

मैं अकसर खुद से यह पूछती हूँ कि किसी समावेशी किण्डरगार्टन कक्षा में शिक्षक को अनुसमर्थन देने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा। मैं विशेष रूप से एक प्रारम्भिक अंतःक्षेपक (Early Interventionist) हूँ और इस नाते कह सकती हूँ कि कक्षा के आसपास रहते हुए उसका अवलोकन करना लाभप्रद होता है क्योंकि तब आप सही समय पर शिक्षक के प्रयासों की सराहना कर पाते हैं। विश्लेषण तो बाद में आता है। प्रेम की गर्माहट और सम्मान सहयोग के आधार हैं। सारी चुनौतियों के बावजूद यह प्रक्रिया सफल होती है!

Pictures source:
http://www.learning4kids.net/list-of-sensory-play-ideas/

अनुराधा नायडू अभी हाल तक एक प्रारम्भिक अन्तःक्षेपक के रूप में **0–6** वर्ष के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ हांगकांग में कार्यरत थीं जो प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्र के तत्वावधान में गैर चीनी भाषा–भाषी आबादी के लिए हांगकांग सरकार द्वारा समर्थित कार्यक्रम था। वे **20** वर्ष पहले विद्या सागर, चेन्नई, से एक विशेष शिक्षिका के रूप में प्रशिक्षित हुईं और वहाँ उनका परिचय पारविषयक (Trans-disciplinary) दृष्टिकोण से हुआ। उनके कार्य में इसका विकास देखा जा सकता है। वे अपने विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को रोचक बनाने के लिए चिकित्सा, शिक्षा और वैकल्पिक संप्रेषण को लगातार एक साथ बुनती चलती हैं। उनसे anuradha.naidu@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल